हडको
hudco

देवालय

चतुर्थ अंक-2023

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

अर्धवार्षिक ई-गृह पत्रिका

संरक्षक एवं मुख्य संपादक
श्री संजय भार्गव,
क्षेत्रीय प्रमुख

सह संपादक एवं परिकल्पना
श्री बलराम सिंह चौहान,
प्रबन्धक(आईटी)/नोडल सहायक (राजभाषा)

संपादक
श्री अशोक कुमार लालवानी,
संयुक्त महाप्रबन्धक(वित्त)/नोडल अधिकारी(राजभाषा)

विशिष्ट मार्ग दर्शन
श्री विवेक प्रधान, प्रबन्धक (परियोजना)
श्री शंकर चौधरी, प्रबन्धक (विधि)

अनुक्रमणिका

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून की अर्धवार्षिक ई–गृह पत्रिका

विषय / शीर्षक	पृ0सं0
संदेश	1-5
सम्पादकीय	6
राजभाषा कीर्तिमान पुरस्कार, तृतीय गृह पत्रिका का विमोचन	7
राजभाषा में उत्कर्ष कार्य हेतु पुरस्कार एवं सम्मान	8
राजभाषा पुरस्कार एवं पखवाडे का विवरण	9-12
53वॉं स्थापना दिवस का आयोजन	13
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	14
राष्ट्रीय अंगदान दिवस जागरूकता कार्यक्रम	15-16
स्वच्छता ही सेवा अभियान अंतर्गत श्रमदान में भागीदारी	16-18
साहित्य से संबंधित रचनायें :–	
राजभाषा एवं स्थानीय भाषाओं का देश की समृद्धि में योगदान (श्री अशोक कुमार लालवानी)	19
जी–20 भारत 2023 (श्री रविन्द्र कुमार)	20-22
हिन्दी के विकास में महिलाओं का योगदान(डॉ0 एम.आर. सकलानी 'मुनिन्द्र'') पूर्व सदस्य सचिव नराकास	23-24
''मच्छरीवादी मच्छर'' डॉ0 केके अस्थाना, मुख्य चीफ असीसटेन्ट(सेवानिवृत) उ.प्र. राजकीय निर्माण बैठकों में आमंत्रित सदस्य	25-26
देहदान चिकित्सा जगत के लिए महादान (श्री संजय भार्गव क्षेत्रीय प्रमुख –हडको)	26-27
चन्द्रयान–3 महिला शक्ति का अनूठा गठजोड़ (श्री रविन्द्र कुमार)	28-29
गढ़वाल का इतिहास (कु0 मीरा)	30-32
मंडाला आर्ट (कु0 तानिया ठकराल)	32-33
कविताऐं: वो सिर्फ माँ ही होती है। (कु0 कृतिका बंसल)	34
कविताऐं: पापा (श्री शंकर चौधरी) एवं जय उत्तराखड (श्री डी.एन. भट्ट)	35-36
कविताऐं: कविताऐं :– नहीं होता (श्रीमती मंजुला चौहान),	37
कविताऐं: बेटी (श्री प्रताप लाल)	38
हडको का योगदान सी.एस.आर. (श्री विवेक प्रधान)	39-41

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून अपनी गृह पत्रिका ''देवालय'' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन कर रहा है। गृह पत्रिकाएं समकालीन विचारणीय विषयों की प्रस्तुति मात्र ही नहीं होती, वरन भावी प्रगति की पूर्वपीठिका का कार्य भी करती हैं। यह श्रेष्ठकर है कि ''देवालय'' के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय गत वर्षों से भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2) की ओर से कई बार ''श्रेष्ठ पत्रिका'' एवं राजभाषा में उत्कर्ष कार्य हेतु पुरस्कार प्राप्त करता रहा है।

राजभाषा के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ-साथ देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय उत्तराखण्ड राज्य के विकास में कई वर्षों से विभिन्न योजनाओं में वित्तपोषण के माध्यम से अहम भूमिका निभाते हुए उत्तराखण्ड राज्य के विकास में भी अपना विशेष योगदान निरंतर देता आ रहा है।

देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिकों तथा पत्रिका के संपादक मंडल को इस ज्ञानवर्द्धक पत्रिका के प्रकाशन के लिए बहुत बहुत बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

पुष्कर सिंह धामी

मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून– 248001
सचिवालय फोन: 0135–2716262
0135–2650433
फैक्स: 0135–2712827
विधान सभा फोन: 0135–2665100
0135–2665497
फैक्स: 0135–2666166
Email: cm-ua@nic.in

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि **"हाऊसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि० (हडको)" (भारत सरकार का उपक्रम)** क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून द्वारा अपनी गृह पत्रिका **"देवालय"** के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका में हिन्दी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ नए निर्माण की नवीन तकनीकी आदि के बारे में जानकारी देने के साथ ही उत्तराखण्ड राज्य की समृद्ध संस्कृति एवं प्रकृति की जानकारी का भी समावेश होगा, जो समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा। हडको द्वारा नए निर्माण कार्यों में की जा रही तकनीकी एवं सामाजिक हित में किये जा रहे उत्कृष्ट कार्यो को एक पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किया जाना अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य है।

मेरी ओर से **"हाऊसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि० (हडको)" (भारत सरकार का उपक्रम)** क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून को अपनी गृह पत्रिका **"देवालय"** के चतुर्थ अंक के सफल प्रकाशन के लिए प्रकाशन मण्डल के सभी अधिकारियों और सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

(पुष्कर सिंह धामी)

संदेश

यह गौरव एवं प्रसन्नता की बात है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून अपनी गृह पत्रिका "देवालय" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। हमारे संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हमें संविधान का सम्मान करना चाहिए तथा अपने काम-काज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना चाहिए।

हिन्दी गृह-पत्रिकाएं अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अभिव्यक्तियों को दूसरों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं जिससे हिन्दी के प्रति लगाव व हिन्दी को सरकारी कामकाज में प्रयोग करने की प्रेरणा मिलती है। हिन्दी को आत्मीय भाव से अपनाने में राष्ट्र प्रेम का भाव जागृत होता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार- प्रसार हेतु केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में किए जा रहे अनेक प्रयासों में हिंदी गृह-पत्रिकाएं अहम भूमिका निभाती हैं।

आशा है कि भविष्य में भी इस तरह के प्रयास जारी रहेंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन में सभी सहयोगी रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित,

एम. नागराज
निदेशक कॉर्पोरेट (प्लानिंग)

Govt of India
Ministry of Home Affairs-Deptt. of Official Language
Town Official Language Implementation Committee
Dehradun (Off-2)

भारत सरकार
गृह मंत्रालय – राजभाषा विभाग
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
देहरादून (का0-2)

संदेश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता हो रही है, **हाऊसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि0** "हडको", (भारत सरकार का उपक्रम), क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून अपनी गृह पत्रिका **"देवालय"** के **प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अंक** के सफल प्रकाशन के पश्चात **चतुर्थ अंक** के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ तथा प्रकाशन मण्डल के सभी पदाधिकारियों व सदस्यगणों को बहुत-बहुत बधाई।

मुझे आशा है इस गृह पत्रिका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ गृह निर्माण की नई-नई तकनीकी से संबंधित जानकारी व उत्तराखण्ड राज्य की समृद्ध संस्कृति एवं प्रकृति का समावेश भी रहेगा। हडको क्षेत्रीय कार्यालय का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

शुभकामनाओं सहित,

राम राज द्विवेदी
सदस्य सचिव, नराकास (का–2)
राजभाषा विभाग, ओएनजीसी, देहरादून

अध्यक्ष कार्यालय : मुख्यालय राजभाषा विभाग, ओएनजीसी, 'ए' विंग, ग्रीन हिल्स, तेल भवन, देहरादून - 248001
दूरभाष: 0135-2792650/2792849; फैक्स: 0135-2755298/2759364 ; ईमेल: rajbhasha@ongc.co.in

संदेश

सरकारी कार्य में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने और उसे समृद्ध करने के उद्देश्य से हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून ने राजभाषा ई-पत्रिका ''देवालय'' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया है। यह एक सराहनीय प्रयास है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु हमें सदैव सृजनात्मक कार्य करते रहना चाहिए। ताकि, जीवन ऊर्जामय और आनंदमय बना रहे। आशा करता हूँ कि गृह पत्रिका के ई-संस्करण से हिन्दी का प्रसार एवं प्रभाव दोनों ही बढ़ेंगे तथा भारत सरकार की मितव्ययता नीति को भी बढ़ावा मिलेगा। देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय इस सराहनीय प्रयास के लिए बधाई का पात्र है।

शुभकामनाओं सहित ।

डी. गुहन
निदेशक (वित्त)

सम्पादकीय

गृह पत्रिका के चतुर्थ अंक ''देवालय'' को आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। गत तीन वर्षों से प्रारम्भ हुआ यह सफर नए आयामों, रचनाकारों को अपने साथ मिलाकर जारी है। राजभाषा हिंदी को विकसित करना तथा सरकारी कामकाज में इसका अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा राष्ट्रीय, प्रशासनिक एवं नैतिक कर्त्तव्य है। इस दिशा में हमारी ''देवालय'' पत्रिका राजभाषा के उत्थान में सदैव अपना योगदान देती आ रही है। क्षेत्रीय कार्यालय का सौभाग्य रहा है कि "देवालय" का प्रकाशन निरंतर होता रहा है। साथ ही स्नेह, प्रेम और प्रोत्साहन इस पत्रिका को सदैव मिलता रहा है। मैं उन सभी लेखकों, रचनाकारों, कार्मिकों एवं उनके पारिवारिक सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ. जिन्होंने रंग-बिरंगी पुष्प रूपी रचनाओं एवं लेखों का अर्पण कर इस पत्रिका को मूर्त रूप देने में अपना सहयोग दिया है।

मुद्रित प्रति में सीमित प्रतियों के मुद्रण की बाध्यता है परन्तु इलेक्ट्रानिक प्रति के चलन में आ जाने से इसका क्षेत्र असीमित हो गया है, इस पहल से किये गए कार्यों एवं श्रेष्ठतम उपलब्धियों की जानकारी हर जन-मानस तक आसानी से पहुँच सकती है। इस संबंध में यहाँ उल्लेख करना समुचित होगा कि हमारी पत्रिका इस कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों की अनुभूति एवं अनुभवों को प्रतिबिंबित करने का मुख्य माध्यम है। हमारे कर्मचारी/अधिकारी गण विभिन्न योजनाओं और परियोजना" आदि के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सक्रिय भूमिका निभाते हुए राजभाषा हिन्दी के विकास के बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका आपको, न केवल कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करेगी अपितु रचनाकारों के राजभाषा संवर्धन हेतु किए जा रहे प्रयासों की झलक भी इसमें देखने को मिलेगी ।

यह पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार स्नेह और प्रोत्साहन पा कर और नये रूप में निखर कर निरंतर प्रकाशित व प्रसारित होती रहे। इस पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों, रचनाकारों, सहयोगियों तथा संपादक मंडल को मेरी हार्दिक शुभकामनायें एवं बधाई।

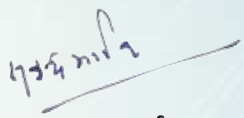

संजय भार्गव
क्षेत्रीय प्रमुख

राजभाषा कीर्तिमान पुरस्कार 'क' क्षेत्र

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)

प्रशस्ति प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय ने 'राजभाषा उत्कर्ष योजना' के अन्तर्गत वर्ष 2022 के लिए राजभाषा कीर्तिमान पुरस्कार का प्रथम स्थान प्राप्त किया।

कार्यकारी निदेशक (राजभाषा) — निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

गृह पत्रिका "देवालय" के तृतीय अंक का विमोचन

दिनांक 15 मार्च, 2023 को हडको मुख्यालय, नई दिल्ली की "राजभाषा कार्यान्वयन समिति" की ऑनलाइन बैठक के पश्चात् श्री एम. नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)/अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक हडको, डॉ. आलोक कुमार जोशी, कार्यकारी निदेशक(राजभाषा), एचटी सुरेश, कार्यकारी निदेशक(परियोजना), श्री हरि मोहन भटनागर, कार्यकारी निदेशक(विधि), श्री शैलेश प्रकाश त्रिपाठी, कार्यकारी निदेशक(आईटी), श्री सुरेन्द्र कुमार, महाप्रबंधक(राजभाषा), श्री नरेंद्र कुमार, सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा), श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), डॉ रेखा चंदोला, प्रबंधक (राजभाषा) आदि अधिकारियों की उपस्थिति तथा ऑनलाइन बैठक से जुड़े सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून की गृह पत्रिका "देवालय" के तृतीय अंक का विमोचन किया गया, जिसमें हडको के मुख्यालय ने भाग लिया।

अध्यक्ष महोदय द्वारा प्रकाशन मण्डल के सभी पदाधिकारियों व सदस्यगणों को बहुत-बहुत बधाई दी गई।

डॉ आलोक कुमार जोशी द्वारा हिंदी भाषा में देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यों की भी सराहना की तथा अवगत कराया गया कि पूर्व में प्रकाशित प्रथम एवं द्वितीय अंक हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) द्वारा भी इन शानदार पत्रिकाओं हेतु पुरस्कृत किया गया तथा पत्रिका प्रकाशन के लिए बहुत-बहुत बधाई दी। श्री संजय भार्गव, क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा इस विमोचन हेतु धन्यवाद दिया।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून को हिन्दी में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों हेतु प्रथम पुरस्कार''

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2), राजभाषा विभाग, ओएनजीसी देहरादून की वर्ष 2023-24 की प्रथम छमाही बैठक दिनाँक 30.06.2023 को होटल एल.पी. विलास, देहरादून में आयोजित हुई। इस छःमाही बैठक में सदस्य सचिव, नराकास राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2023-24 हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून को हिन्दी में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों हेतु ''प्रथम पुरस्कार'' (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र) से सम्मानित किया गया जिसे क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव, संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त)/ नोडल अधिकारी (रा.भा.), श्री अशोक कुमार लालवानी एवं प्रबंधक (आईटी)/ नोडल सहायक (रा.भा.), श्री बलराम सिंह चौहान ने ग्रहण किया। इस बैठक में श्रीमती आर.एस. नारायणी, अध्यक्षा, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), भारत सरकार, ओएनजीसी राजभाषा विभाग एवं श्री राम राज द्विवेदी, सदस्य सचिव, नराकास, भारत सरकार, ओएनजीसी राजभाषा विभाग, श्री छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक(कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गाजियाबाद, श्री अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गाजियाबाद एवं 72 सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

राजभाषा उत्कर्ष योजना के अंतर्गत प्राप्त पुरस्कार :

हडको राजभाषा अनुभाग द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय को अवगत कराया गया कि अध्यक्ष एव प्रबंध निदेशक महोदय के अनुमोदन से राजभाषा उत्कर्ष योजना के अतर्गत वर्ष-2022 में क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून को निम्न पुरस्कार प्राप्त हुऐ।

पुरस्कारों के नाम	पुरस्कार	प्राप्तकर्ता के नाम
➢ राजभाषा कीर्तिमान पुरस्कार ‘क‘ क्षेत्र	प्रथम	क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून
➢ हिन्दी डिक्टेशन योजना	प्रथम	श्री संजय भार्गव, क्षेत्रीय प्रमुख
➢ हिन्दी पत्राचार योजना	प्रथम	श्री ए.के. लालवानी, संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त)
➢ हिन्दी ई-मेल लेखन योजना	प्रथम	श्री बलराम सिंह चौहान, प्रबंधक (आईटी)

राजभाषा हिन्दी पखवाड़े का आयोजन।

क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून में राजभाषा हिन्दी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 14 से 29 सितम्बर, 2023 विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे-स्लोगन लेखन, आशुभाषण, चित्र अभिव्यक्ति, शब्द ज्ञान, कविता पाठ एवं हिन्दी निबंध के साथ किया जिसका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है:-

हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून में दिनांक 14.09.2023 को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ अतिथि, श्री आशीष गर्ग, सेवानिवृत्त मुख्य महा प्रबंधक (ओएनजीसी), श्री अमित जैन वरिष्ठ प्रबंधक (एस.बी.आई.) एवं श्री अनिल मेहता सर्वे ऑफ इंडिया (सेवानिवृत) को आमंत्रित किया गया। राजभाषा हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर राजभाषा हिन्दी की उन्नति व प्रगति यात्रा की जानकारी सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों विस्तार से अवगत कराया गया। इस दौरान ‘हिन्दी दिवस का महत्व‘ पर आशुभाषण प्रतियोगिता का

हडको देहरादून में राजभाषा पखवाड़े के शुभारंभ

देहरादून। हडको देहरादून में राजभाषा पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी दिवस से किया। इस अवसर 'हिंदी दिवस का महत्व' विषय पर आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसका निर्णय आमंत्रित निर्णायक मंडल पर विशिष्ट अतिथि आशीष गर्ग, अमित जैन एवम अनिल मेहता द्वारा किया गया। आशुभाषण प्रतियोगिता में विवेक प्रधान प्रथम, शंकर एवम रविंद्र दूसरा, अशोक एवम बलराम को तीसरा, मीरा, तान्या एवम कृतिका को प्रोत्साहन विजेता पुरस्कार को घोषित किया। कार्यक्रम के अंत में संजय भार्गव क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया एवम पखवाड़े में सभी प्रतिभागियो को हिंदी में ज्यादा से ज्यादा कार्य करने एवम सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर धर्मानंद ,निखिल आदि उपस्थित रहे।

“संस्कृत है इसकी जननी, हिन्दी देश की शान है।
विश्व में है इसका मान, हिन्दी शब्दों की खान है।।”

श्री बलराम सिंह चौहान

दिनांक 14.09.2023 को हिंदी राजभाषा पखवाडे का शुभारंभ किया गया। क्षेत्रीय प्रमुख, हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून ने कार्यालय में हिंदी के प्रचार एवं प्रसार को बढ़ाने हेतु प्रभावी सुझाव दिये।
क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा हिंदी के कार्यों में बढोत्तरी हेतु पूर्व में जारी दिशानिर्देशों की पुनः चर्चा की गई और सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अधिक से अधिक हिंदी में वार्तालाप एवं कार्य करने का अनुरोध किया गया। दिनांक 18.09.2023 को शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 19.09.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय में चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता आयोजित की गई। चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में एक चित्र दिया गया जिसका शीषर्क व लघु वर्णन करने हेतु हर प्रतिभागी को १५ मिनट का समय दिया गया। क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव द्वारा पूर्व मे आयोजित स्लोगन प्रतियोगिता में 'राष्ट्रीय एकता एवं देश के विकास में हिंदी का योगदान' विषय के परिणाम घोषित किए, सभी हडको कर्मियों ने इन प्रतियोगिताओं में बड़-चड़ कर भाग लिया।

दिनांक 20-09-2023 को हडको देहरादून में आयोजित भाषा विज्ञान पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस बैठक एवं कार्यशाला में हिंदी एवं भाषा विज्ञान वरिष्ठ शोधकर्ता डॉ कमला पंत जी को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। श्री बलराम सिंह चौहान, प्रबंधक (आईटी)/नोडल सहायक (रा.भा.) द्वारा हडको देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा हिंदी में किए जा रहे कार्यों, उपलब्धियों एवं हिंदी से सम्बंधित नियमों एवं उनका पालन इत्यादि से अवगत कराया गया।

डॉ कमला पंत जी ने भाषा विज्ञान की बारीकियों एवं राजभाषा हिंदी के एतिहासिक परिपेक्ष्य, माहेश्वर सूत्र (संस्कृत शिवसूत्राणि या महेश्वर सूत्राणि) के 14 सूत्रों की रचना (चौदह बार डमरू बजाने हुई) वर्णमाला प्रकट हुई तथा भाषा के विभिन्न घटकों, ध्वनि-विभाग, संज्ञा, सर्वनाम, वाक्य रचना इत्यादि पर अपना व्याख्यान दिया गया। क्षेत्रीय कार्यालय के समस्त कर्मियों द्वारा इस सत्र की सराहना की गई जिसमें भाषा संबंधी ज्ञान को समझने, लिखने एवं बोलने की कला को और प्रभावी रूप से समझाया गया।

दिनांक 21-09-2023 को उत्कृष्ठ कवि, श्री संजीव जैन ''साज'', मुख्य महाप्रबंधक, ब्रिडकुल, उत्तराखण्ड सरकार, देहरादून को आमंत्रित किया गया। जिनके मार्गदर्शन में क्षेत्रीय कार्यालय में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी प्रतिभागियों द्वारा पूर्ण रुचि के साथ प्रतिभाग किया गया, सभी ने स्वरचित व अन्य कविता का पाठ किया।

तथा श्री संजीव जैन द्वारा इस प्रतियोगिता के विजेताओं की भी घोषणा की गई। कार्यक्रम का समापन नोडल अधिकारी (राजभाषा) श्री अशोक कुमार लालवानी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

दिनांक 29-09-2023 को राजभाषा हिन्दी पखवाडा समापन समारोह एवम पुरुस्कार घोषणा हेतु श्रीमती विनीता नौटियाल, अर्थशास्त्री एवं भाषाविद्व को आमंत्रित किया गया। क्षेत्रीय प्रमुख, संजय भार्गव की अध्यक्षता में श्रीमती विनीता नौटियाल द्वारा राजभाषा हिन्दी पखवाडा का आयोजन अंतर्गत राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों के पुरस्कारों की घोषणा की गई।

इसके साथ ही राजभाषा उत्कर्ष योजना वर्ष 2022 के प्राप्त परिणाम :-

- श्री अशोक कुमार लालवानी/नोडल अधिकारी (राजभाषा) ने हिंदी के प्रचार प्रसार, सक्रिय सहभागिता एवं अतुल्य योगदान के अंतर्गत हिन्दी पत्राचार लेखन योजना में प्रथम स्थान पुरस्कार प्राप्त किया जिसका प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

- श्री बलराम सिंह चौहान, प्रबंधक (आईटी)/ नोडल सहायक (राजभाषा) ने हिंदी के प्रचार प्रसार, सक्रिय सहभागिता एवं अतुल्य योगदान के अंतर्गत हिन्दी ई-मेल लेखन योजना में प्रथम स्थान पुरस्कार प्राप्त किया जिसका प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

"नई सोच को लाना है, हिन्दी जगरूकता को बड़ाना है।
हिन्दी को सम्मान दो, अपने दिलों मे स्थान दों।।"

कु० मीरा

53वॉं स्थापना दिवस (Foundation Day) का आयोजन

हाउसिंग एवं अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (हडको) क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून द्वारा 53वॉं स्थापना दिवस समारोह, रेड कोल होटल, हरिद्वार रोड, देहरादून में मनाया गया। इस कार्यक्रम में हडको के अधिकारी एवं कर्मचारी तथा उनके परिवार सदस्य इस कार्यक्रम में शामिल हुए। इसके अतिरिक्त उत्तराखंड राज्य के विभिन्न सरकारी विभाग/उपक्रम/संगठन जैसे सिडकुल, उत्तराखंड ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन, पीआरएसआई देहरादून, इकोग्रूप देहरादून एवं हडको द्वारा बेस्ट प्रैक्टिस अवार्ड रेरा आदि के वरिष्ठ अधिकारियों एवं अन्य अतिथियों इस स्थापना दिवस समारोह में उपस्थित हुए।
जिनका क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव द्वारा स्वागत किया गया।

"राष्ट्र का है गौरव, भारतीयता की पहचान है।
हिंदी है हमारी राजभाषा, इसका हमें अभिमान है।"

श्री अशोक कुमार लालवानी

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

9वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस दिनांक 21-06-2023 के अवसर पर देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय में योग दिवस मनाया गया जिसमें क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय भार्गव के मार्गदर्शन में समस्त स्टाफ ने योग की विभिन्न आसन किये एवं प्राणायाम एवं ध्यान के सत्र में भाग लिया और योग-साधना के महत्व को जाना।

क्षेत्रीय प्रमुख ने सभी को नियमित योग करके स्वस्थ रहने का सुझाव दिए, योग से मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है इसे निरंतर करते रहने से रोग समीप नहीं आते है।
''करो योग रहो निरोग'' मंत्र पर दैनिक जीवन में अपनाने पर पुरजोर दिया।

हडको कर्मियों द्वारा किये गए विभिन्न योगासन

हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून में ”प्रथम राष्ट्रीय अंगदान दिवस“ जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन।

प्रथम राष्ट्रीय अंगदान दिवस पर अवसर पर हडको मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा ऑनलाइन बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें हडको मुख्यालय से डॉ. आलोक कुमार जोशी, कार्यकारी निदेशक (प्रचालन/राजभाषा), श्री शैलेश प्रकाश त्रिपाठी, कार्यकारी निदेशक (आईटी), श्रीमती वन्दना मोतसरा, ईडी (एचआर) तथा सभी क्षेत्रीय एवं विकास कार्यालयों के अधिकारियों/ कर्मचारियों ने भाग लिया।

इस दौरान डॉ. आलोक कुमार जोशी ने प्रथम राष्ट्रीय अंगदान दिवस पर मानव कल्याण हेतु देहदान, अंगदान व नेत्रदान बिषय पर व्याख्यान दिया तथा इस कार्य को सफ़ल बनाने हेतु शपथ ली गई । हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून में दिनांक 03-08-2023 को प्रथम राष्ट्रीय अंगदान दिवस का आयोजन किया गया, इस अवसर पर दधीचि देहदान समिति, देहरादून (उत्तराखंड) जो मानव कल्याण हेतु देहदान, अंगदान, नेत्रदान को समाज में स्वीकार्यता दिलाने हेतु सकरात्मक रूप से समाज में प्रयासरत है को जागरूकता अभियान के अंतर्गत आमंत्रित किया गया। समिति के सदस्य विजय जुनेजा, डॉ० मुकेश गोयल, श्री नीरज पाण्डेय, एडवोकेट, श्री कृष्ण कुमार अरोड़ा एवं श्री कृष्ण गोपाल जी उपस्थिति रहें।

इस अवसर पर श्री विजय जुनेजा द्वारा देहदान, अंगदान व नेत्रदान की महत्ता पर प्रकाश डाला गया। सनातन धर्म के दृष्टिकोण से क्या देह दान या नेत्र दान के पश्चात अगला शरीर प्राप्त होने में कोई व्यवधान होता है? इस विषय पर एडवोकेट, नीरज पांडे द्वारा समाज में व्याप्त भ्रांति को श्रीराम चरित मानस की एक चौपाई तथा वेद व्यास जी द्वारा लिखित श्लोक की व्याख्या कर इसे निरर्थक बताया गया तथा सनातन धर्म की मूल परोपकार की भावना के अनुरूप सभी को देहदान, अंगदान व कॉर्निया दान के लिए प्रेरित किया गया इसके साथ ही विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी दिए। अंत में क्षेत्रीय प्रमुख, संजय भार्गव ने सभी का धन्यवाद के साथ कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम में हडको क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून से श्री अशोक कुमार लालवानी, संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त), श्री बलराम सिंह चौहान, प्रबंधक (आई.टी.), श्री शंकर चौधरी, प्रबंधक (विधि), श्री निखिल कुकरेती, श्री डीएन भट्ट, श्री प्रताप लाल, कुमारी मीरा, कुमारी कृतिका एवं आदि उपस्थित थे।

स्वच्छता ही सेवा अभियान अंतर्गत श्रमदान में भागीदारी

माननीय प्रधान मंत्री एवं भारत सरकार के निर्देशानुसार हडको मुख्यालय, कार्यकारी निदेशक (एचआर) से प्राप्त परिपत्र दिनांक २६.०६.२०२३ के अनुपालन में, हडको, क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून द्वारा दिनांक 01-10-2023 को सुबह 10-00 बजे से 11-00 बजे तक टपकेश्वर मंदिर एवं इसके आसपास के क्षेत्र में सभी कार्यालय कर्मियों एवं लगभग 150 स्कूली छात्रों ने प्रतिभाग कर सफाई अभियान/श्रमदान में भाग लिया। मंत्रालय के निर्देश के अनुसार सफाई से पहले और बाद की तस्वीरें साइट में अपलोड की गई, जिसमें से कुछ मुख्य प्रासंगिक तस्वीरें निम्न प्रकार से हैं।

सफाई से पहले

सफाई के बाद

विभिन्न संस्थाओं के साथ

क्षेत्रीय कार्यालय में सफाई कर्मी को सम्मानित करते हुए

Certificate of Appreciation

This is to certify that

HUDCO REGIONAL OFFICE, DEHRADUN

Has contributed in
Shramdaan for Swachh Bharat
On
1st October, 2023, at 10 AM

A Swachh Bharat Mission Initiative

प्रशंसा प्रमाण पत्र

देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय टीम

राजभाषा एवं स्थानीय भाषाओं का देश की समृद्धि में योगदान

अशोक कुमार लालवानी
संयुक्त महाप्रबंधक(वित्त)

हमारा देश भारत विभिन्न धर्म संस्कृतियों व रीतिरिवाजों को मानने वाले व विभिन्न भाषाएं बोलने वाले जन समुदायों का एक अनूठा संगम है जहाँ हर दस किलोमीटर की दूरी पर भाषा व संस्कृति की भिन्नता की झलक मिलती है, इसी कारण हमारे संविधान में जहाँ राजभाषा के रूप में बहुसंख्यक आबादी द्वारा बोली जाने वाली हिंदी भाषा को मान्यता दी गयी वही बाईस अन्य क्षेत्रीय स्तर पर बोली जाने वाली भाषाओं को भी संवैधानिक मान्यता प्राप्त है।
यह क्षेत्रीय भाषाएं स्थानीय संस्कृति, रीतिरिवाजों व पहचान को संरक्षण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। ब्रिटिश शासन से स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्वकाल में आजादी की लड़ाई में भी विभिन्न क्षेत्रीय जन समूहों में देशभक्ति की अलख जगाने तथा उन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित करने में स्थानीय भाषाओं में प्रकाशित पत्रिकाओं जैसे बंगाल गजद, केसरी, परिदसक इत्यादि ने महत्वपूर्ण कार्य किया।

स्थानीय भाषाओं का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है।

- क्षेत्रीय भाषाएं स्थानीय समुदाय की सांस्कृतिक विरासत व पहचान से दृढ़ता से जुड़ी होती हैं तथा राष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता में सहयोगी अनूठे रीतिरिवाजों, सभ्यताओं, लोकसाहित्य व मौखिक इतिहास को सहेज कर रखती हैं।
- क्षेत्रीय भाषाएं एक विशाल स्थानीय जनसमुदाय जो अधिकारिक या राजभाषा के धाराप्रवाह प्रयोग में सहज नहीं हैं, के मध्य संचार/वार्तालाप का माध्यम बनती हैं। अपनी राजभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा व साक्षरता के अनेक लाभ हैं। इससे बच्चे विभिन्न विचार व अवधारणाएं बेहतर तरीके से समझते हैं व अन्य भाषाएं अपनाने में अधिक सहिष्णु बनते हैं।
- स्थानीय भाषाओं के जानकार जनप्रतिनिधि राजनीति में स्थानीय समूहों का बेहतर नेतृत्व करने तथा स्थानीय मुद्दे राष्ट्रीय स्तर पर सशक्त रूप से रखने व उनके समाधान में सक्षम होते हैं।
  राजभाषा तथा स्थानीय भाषा के जानकार आर्थिक गतिविधियों तथा व्यापार बेहतर तरीके से संचालित करने में सक्षम होते हैं तथा स्थानीय उत्पाद की जानकारी जनसमूहों तक बेहतर तरीके से पहुंचाने में अधिक सफल रहते हैं।

परिणामतः न केवल स्थानीय स्तर पर अपितु राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है। जिसका लाभ पुरे देश को प्राप्त होता है। स्थानीय व्यापार, वाणिज्यिक गतिविधि, पर्यटन तथा संस्कृति से जुड़े व्यवसाय स्थानीय भाषा व संस्कृति को ज्ञान से सकल आर्थिक विकास व क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय विकास में सहयोग व योगदान करते हैं। राजभाषा व क्षेत्रीय भाषाएं संबंधित क्षेत्रों/राष्ट्र के गौरव का प्रतीक होता है व बहुराष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर समुदाय विशेष/राष्ट्र का प्रतिनिधित्व भी करती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार राजभाषा के रूप में हिंदी के साथ-साथ मान्यता प्राप्त स्थानीय भाषाओं के प्रचलन व विकास पर भी अपना ध्यान केंद्रित कर रही है।

जी–20 भारत 2023

रविन्द्र कुमार
ए. एफ. (एस.जी)

ज्यादा ताकत ज्यादा जिम्मेदारी का अहसास
जी–20–नई दिल्ली विश्व को दिलाया विश्वास

कहा जाता है कि ज्यादा ताकत में ज्यादा जिम्मेदाजी भी होती है। विश्व द्वारा भारत को जी 20 का अध्यक्ष एवं मेजवानी का पहली बार जिम्मा देकर इस कथन को साकार किया है। नई दिल्ली ने जी 20 का प्रथम बार 9-10 सितम्बर 2023 को सफल शिखर सम्मेलन आयोजित कर विश्व के इस बड़े मंच पर अपनी सक्षमता को परिलक्षित किया। भारत को इसकी जिम्मेदारी एक ऐसे कठिन दौर में मिली जहाँ यूक्रेन रूस युद्ध के मध्य सहमती, असहमति के मध्य, दुनियां बंटी है। इस कठिन दौर में सबको एक साथ लेकर चलने में भारत ने वसुधैव कुटुम्बकम और अतिथि देवो भवः की अपनी शाश्वत रीति-निति से दुनियां के दिग्गजों का स्वागत किया।

जी 20 परिचयः

जी 20 को समझने के लिए हमें पहले जी-7 को समझना चाहिए। जी–7 उन राष्ट्रों का समूह था, जो विकसित एवं आर्थिक रूप से मजबूत थे। इसमें अमेरिका, ब्रिटेन, इटली, जापान, कनाडा, फ्रांस और जर्मनी शामिल थे। इसके बाद वर्ष 1997 में इसमें रूस को शामिल किया किन्तु किसी कारण इसे इससे निष्काषित कर दिया। इस प्रकार 8 राष्ट्रों के बाद भी इसकी संख्या 7 हो रही। जी 20 आर्थिक रूप से प्रमुखतः कार्य करता है। यह वैश्विक मंदी से निपटने हेतु एक काइगर मंच है।

जी 20 की आवश्यकता–

वर्ष 1997 में दक्षिण एशियाई देशों में जिसमें थाईलैंड, इण्डोनेशिया,दक्षिण कोरिया फिलीपिंस आदि राष्ट्रों में मंदी आई। इससे इन राष्ट्रों के सम्मुख एक कठिन वित्तीय संकट उत्पन्न हुआ ऐसे समय में थाईलैंड ने अपने आप अपनी मुद्रा का अवमुल्यन कर दिया, इसकी देखा देखी दक्षिण एशिया के दूसरे देशों ने भी अपनी मुद्रा का अवमुल्यन किया। इनका विचार था कि अवमुल्यन से इनके देशों में निवेश को बढ़ावा मिलेगा जिससे इनकी आर्थिक स्थिती सुधरेगी किन्तु इनके समक्ष कठोर एवं गंभीर वित्तीत्र संकर हो गया तथा इन देशों में मार काट की नौबन पहुँच गई। ऐसे में विश्व बैंक (WB) आई एम एफ, जैसी वित्तीय संस्थाओं द्वारा इनकी सहमता का इनको बहुत मुश्किल से उभारा। विश्व को ऐसी चुनौतियों से आगे निकलकर स्थितियों का सामना करने हेतु एक वैश्विक मंच की आवश्यकता हुई तथा इसके विकासशील देशों को शामिल कर जीन का व्यापक रूप- जी–20 बनाया। वर्तमान में इसके सदस्य राष्ट्र 19 है तथा यूरोपियन यूनियन इसकी सदस्य है। विश्व में जब 2008 में मंदी का दौर शुरू हुआ तथा विश्व को खतरे की आहर लगने लगी तब 2008 में सम्मेलन के स्थान पर शिखर सम्मेलन का आयोजन वाशिंगटन अमेरिका में हुआ। इसमें सम्मेलन के एकत्रित होने वाले वित्त मंत्रीयों एवं केन्द्रीय बैंकों के प्रमुख शामिल नहीं हुए। बल्कि जी–20 के राष्ट्राध्यक्ष स्वमं उपस्थित हुए जिससे इस समूह को विश्व परिपेक्ष में महत्व मिला। जी–20 राष्ट्र आपसी आर्थिक सहयोग से आर्थिक मंदी से निपटने के तौर-तरीकों एवं प्रबन्धन पर कार्य करते हैं।

अब यह मंच विश्व में बहुत शक्तिशाली मंच है, इसमें वित्तीय सहयोग के अतिरिक्त एक राय बनाने हेतु विश्व के अन्य मुद्दों यथा आतंकवाद, मानव तस्करी, ग्लोबल वार्मिंग आदि भी शिखर सम्मेलन के एजेंडे में शामिल होते हैं।

जी-20 का महत्वः- जी-20 समूह विश्व का सबसे ताकतवर समूह है जो पूरे विश्व की जी.डी.पी का 85% है। इससे स्वयं ही विश्व में जी-20 की महत्वता का पता चलता है। विश्व की 66 % आवादी अर्थात दो तिहाई आवादी जी-20 देशों की है जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। ऐसे में कोई भी देश इसमें शामिल क्यों नहीं चाहेगा विश्व में व्यापार की बात करें वो जी-20 देशों का 75% व्यापार होता है। इससे इसकी महत्वता अपने आप ही समझी जा सकती है।

सदस्य- अर्जेंटिना, मैक्सिको, जापान, ब्राजीन, कनाड़ा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, यूण्के, अरब, टर्की अमेरिका मिलाकर 19 राष्ट्र एवं यूरोपियन यूनियन है ।

जी-20 कार्य प्रणालीः- जी-20 की कार्यप्रणाली के दो ट्रेक होते है। पहला ट्रेक ‘‘वित्त ट्रेक’’ होता है जिसका अध्यक्ष वित मंत्री और केंद्रीय बैंकों के प्रमुख होते हैं। दूसरा ट्रेक ‘‘शेरपा’’ ट्रेक होता है। इसका अध्यक्ष शिखर सम्मेलन आयोजित करने वाले राष्ट्राध्यक्ष चुनते हैं। भारत के वर्तमान शेरपा अमिताभ कांत हैं जो नीति आयोग में सी ई ओ रह चुके हैं। शिखर सम्मेलन के आयोजन से पूर्व शेरपा ट्रेक में 60 स्थानों पर 200 से ज्यादा बैठकें आयोजित की गई। इससे एजेंडे का निर्धारण किया जाता है। इस एजेंडे पर ही विश्व के राष्ट्राध्यक्ष शिखर सम्मेलन में अपना पक्ष-विपक्ष रखते है। इन दोनों ट्रेकों के अतिरिक्त संपर्क समूह का ट्रेक भी होता हैं। इसमें जी-20 देशों के नागरिक, समाजों, सांसदों, विचार मंचो, महिलाओं, युवाओं, श्रामिकों ओर शोध कर्ताओं को एक साथ लाते हैं। जो अपना एजेंडा जी-20 हेतु तय करते हैं।
भारत जी-20 का पहली बार आयोजक एवं अध्यक्ष बना। इससे पूर्व इसका अध्यक्ष वर्ष 2022 हेतु इण्डोनेशिया था, इसके साथ वर्ष 2021 में ब्राजील को जी-20 के आयोजन एवं अध्यक्षता सौंपी गई है। आयोजक राष्ट्र एक वर्ष तक जी-20 का अध्यक्ष रहता है तथा आगामी अध्यक्ष राष्ट्र एक वर्ष के अन्दर अध्यक्ष राष्ट्र से हर एक प्रकार की मदद लेकर अग्रणि शिखर सम्मेलन की तैयारी करता है

जी- 20 नई दिल्ली के मुद्दे- भारत ने जी- 20 एजेंडे में जलवायु- परिवर्तन, आर्थिक विकास, डिजीटल आर्थिक व्यावस्था, विकासशील देशों को आसान कर्ज, जैसे मुद्दे शामिल किये जिसे जी- 20 ने सहर्ष स्वीकार किया।

जी-20 के समक्ष चुनौतियां- आज यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध के कारण दुनियां भर में तनाव का माहौल है। ऐसे में दुनियां का कुटनीतिक रूप से साथ लाने की चुनौती है। युद्ध के कारण स्वास्थ्य से जुड़े संकट, कोविड से हुआ नुकसान तथा स्वास्थ्य से आर्थिक तौर पर परेशान दुनियाँ के लिए हल तलाशना है। पूरी दुनियां में खाने-पीने से लेकर बढ़ी मंहगाई से वैश्विक स्तर पर छाई मुद्रास्फिती और मंदी के खतरें का समाधान खोजना एक चुनौती है। इन समस्यानों के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन पर रोक लगाना तथा सततू विकास के लक्ष्यों के साथ-साथ जी-20 के लक्ष्यों को हाासिल करने के लिए सहमति बनाना प्रमुख चुनौती है।

जी–20 का घोषणा पत्र

भारत अपनी मेजवानी के दौरान यूक्रेन-रूस युद्ध को इस आर्थिक मंच पर हावी न होने देने में कामयाब रहा। भारत मंडपम में पहले दिन ३७ पृष्ठों के नई दिल्ली घोषणा पत्र पर एक सहमति बनी। इसके आलावा भारत से मध्य पूर्व और यूरोप को जोड़ने वाले आर्थिक गलियारे की घोषणा हुई। यह आर्थिक कॉरिडोर, दुनियां के आठ देश मिलकर बनाएंगे। इस ऐतिहासिक काल को आने वाली पीढियां याद रखेंगी। जी–20 में निम्न प्रस्ताव स्वीकार किऐ गये–

दहशतगर्दों के पनाहगारों पर चोट तथा आतंक के सभी कार्यों से लड़ने का संकल्प।

अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने हेतु निजी क्षेत्रों की भागीदारी-बढ़ाना।

1. महिला सशक्तिकरण हेतु नये कार्य समूह पर सहमति।
2. भ्रष्टाचार से निपटने हेतु कानून प्रर्वतन से संबंधित अंतराष्ट्रीय सहयोग एवं सूचना तंत्र का मजबूत करना।
3. जी–20 देशों को ऋण झाल से बाहर निकालने हेतु पुख्ता राजनीति तैयार करना
4. क्रिप्टों फरेंसी के विनीमय पर सदस्य देशों में सहमति बनी।
5. बेरोजगारी से निपटने के लिए जी–20 देशों के बीच नौकरी का डाटाबेस तैयार किया जायेगा।

इस प्रकार नई दिल्ली घोषणापत्र 2023 अपनाने के साथ हीं भारत ने इतिहासरचा। हम बेहतर आर्थिक समूद्ध और सामंजस्यपूर्ण भविष्य हेतु साथ मिलकर चलने का संकल्प लिए गया ।

हिन्दी के विकास में महिलाओं का योगदान

डॉ० एम.आर. सकलानी ''मुनिन्द्र''
पूर्व सदस्य सचिव नराकास, आयकर विभाग, देहरादून

किसी भी देश की अस्मिता व पहिचान उसकी भाषा में होती है और भाषा ही एक ऐसा सेतु है जो सम्पूर्ण देश को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बांधता है। हिन्दी देश के स्वतंत्रता संग्राम की भाषा रही है। देश के कोने-कोने से आकर एकजुट होने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हिन्दी भाषा के माध्यम से जन सम्पर्क करते थे। हिन्दी वह नींव है जिस पर महात्मा गांधी ने सम्पूर्ण राष्ट को एक होने का सन्देश दिया और उसमें वे सफल भी हुए। जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ, तो हमारे देश के राष्टीय नेताओं ने एक राष्ट, एक राष्टीय ध्वज और एक राष्ट भाषा का सपना देश के सन्दर्भ में देखा था और इसी के परिणामस्वरूप 14 सितम्बर, 1949 को सर्वसम्मति से हिन्दी को देश की राजभाषा का गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ और इसलिए हम हिन्दी भाषा को सम्मान देने के लिये 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस व सम्पूर्ण सितम्बर माह में हिन्दी सप्ताह, हिन्दी पखवाडा और हिन्दी माह का आयोजन कर हिन्दी के विकास हेतु कार्य करते हैं। आज हिन्दी राष्ट भाषा, राजभाषा, राज्यभाषा और देश की सम्पर्क भाषा के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिन्दी न केवल देश के करोडों लोगों की सांस्कृतिक और सम्पर्क भाषा है, बल्कि बोलने और समझने वालों की संख्या की दृष्टि से संसार की तृतीय बडी भाषा है। भारत के सभी धर्मो और विभिन्न भाषा-भाषियों ने हिन्दी के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज आकाशवाणी, दूरदर्शन, टी०बी०, समाचार पत्र आदि सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार कर रहे हैं और सरकारी कामकाज में भी इसका प्रयोग बढाने के लिए भारत सरकार की राजभाषा नीति का क्रियान्वयन सुनिश्चित कर रहे हैं। हिन्दी के विकास और प्रचार-प्रसार में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। महिलाओं ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने के लिए जहां एक ओर कविताएं, कहानी, उपन्यास आदि लिखे हैं वही दूसरी ओर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी उल्लेखनीय भूमिका अदा की है। भक्तिकाल में मीराबाई जैसी कवयत्री ने अपनी रचनाओ के माध्यम से हिन्दी को काफी समृद्ध किया। स्वतंत्रता के बाद देश में परिस्थिति बदलने के साथ ही साहित्य और लेखन में महिलाओं के स्वर और विषयों में भी बदलाव आया। महिलाओं ने अपनी पारम्परिक छवि को तोडकर एक नये रूप में दिखना शुरू किया। लेखिका मन्नू भण्डारी, उषा प्रिंयबदा, चन्द्रकिरण, सौनरिक्सा आदि लेखिकायें इसके उदाहरण हैं। उ० प्र० की पहली महिला राज्यपाल सरोजनी नायडू ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिलाओं के सन्दर्भ में उनका विचार था कि भारतीय नारी हर क्षेत्र में अब आगे बढ रही है और वह कभी कृपा की पात्र नहीं रही है।

नये परिवेश में पुरूषों के साथ अपना कन्धा बराबरी से मिलाकर चलने में और पारिवारिक तथा सामाजिक मूल्यों में बदलाव के साथ वैयक्तिक चेतना में महिला ने हिन्दी साहित्य के विकास की दिशा में एक नये स्वर को जन्म दिया। जिसमें साहित्यकार अमृता प्रीतम, शिवानी, कृष्णा सोवती, मेहरूनिशा परवेज आदि ने हिन्दी साहित्य के विकास के पथ को नये आयाम दिये। भारत की तीसरी प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का हिन्दी के प्रचार-प्रसार में काफी योगदान रहा। उन्हें साहित्यिक संस्कार उनके पिता प० जवाहर लाल नेहरू से मिले। हिन्दी को विश्व स्तर पर पहिचान दिलाने के लिए उन्होंने सर्व प्रथम वर्ष 1975 में वर्धा में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि 'हिन्दी विश्व की महान भाषाओं में एक है।

भारत की सभी भाषाऐं, भारत की सांस्कृतिक परम्परा की समान उत्तराधिकारी हैं, ये भाषाऐं भारत की राष्टीय भाषायें हैं और इनमें हिन्दी भारत की राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा है क्योंकि इस भाषा का परिवार सबसे बडा' है।

पूर्व विदेश मंत्री स्वर्गीय सुषमा स्वराज का भी हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार व सरकारी कामकाज में हिन्दी के अधिक से अधिक प्रयोग बढाने हेतु महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनके माध्यम से विदेश मंत्रालय द्वारा भोपाल में 18 से 20 सितम्बर 2015 तक आयोजित दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में उन्होंने विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा का बढावा देने का आह्वान किया गया और साथ ही अपने व्यक्तिगत और सरकारी कामकाज में भी हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग बढाने पर बल दिया। तत्पश्चात विदेश मंत्रालय द्वारा दि० 18 से 20 अगस्त 2018 में मारीशस में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में भी उन्होंने भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा को बचाने पर जोर देते हुए कहा कि अलग-अलग देशों में हिन्दी को बचाने की जिम्मेदारी भारत ने ली है और इसे भारत के साथ विश्व स्तर पर पहुंचाना हमारा दायित्व है।
गोवा के राज्यपाल पद पर सुशोभित करने वाली साहित्यकार डा० मृदुला सिन्हा ने भी हिन्दी को समृद्ध बनाने में उल्लेखनीय भूमिका अदा की। विश्व हिन्दी सम्मेलन मारीशस में उन्होंने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने भाषण में हिन्दी के विकास और प्रचार-प्रसार पर जोर दिया जिससे हिन्दी विश्व मंच पर मुखरित हो सके। एक स्थापित लेखिका के रूप में उन्होंने कई उपन्यास, कहानी संग्रह आदि लिखकर हिन्दी का विकास किया।

वर्तमान समय में जब टेलीविजन और इण्टरनेट जैसे मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं जिससे साहित्य में लोगों की रूचि कम हो गई है। फिर भी महिलाओं में साहित्य लेखन के द्वारा हिन्दी को समृद्ध किया, जिनमें लेखिका बाबुषा कोहली, मनीषा कुलश्रेष्ठ, योगिता यादव आदि महिलाएं हिन्दी साहित्य के विकास में अपना योगदान दे रही हैं। महिलाओं ने हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में आकर भी हिन्दी के प्रचार -प्रसार में अपना योगदान दिया। पत्रकार अनुराधा सिंह, मोनिका कुमार, बरखा दत्त जैसे कई पत्रकार हिन्दी के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। इसके साथ ही फिल्म क्षेत्र में भी महिलाऐं हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रही हैं।

अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में अनेकों महिलाएं हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार कर रही है, उनमें साहित्यकार व शिक्षिका डा० मधु धवन ने तमिलनाडू जैसे क्षेत्र में जहां हिन्दी भाषा का सबसे पहले विरोध हुआ, वहां स्वर्गीय डा० मधु धवन ने हिन्दी की पताका फहराई और हिन्दी के साथ-साथ द्रविड भाषओं को जोडकर हिन्दी का अध्ययन, अध्यापन व प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने तमिलनाडू में 'हिन्दी साहित्य अकादमी' स्थापित की और इसके महासचिव के रूप में 'तमिलनाडू साहित्य बुलेटिन' नियमित रूप से प्रकाशित कर हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार किया और लोगों में हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम व रूझान जागृत किया तथा कई पुस्तकें लिखकर उन्हें हिन्दी भाषा का साहित्य उपलब्ध करवाया। विदेशों में भी प्रवासी भारतीय महिलाओं ने हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में पुस्तकें लिखकर हिन्दी का मान बढाया। उनमें अमेरिका में कथा साहित्य के क्षेत्र में उषा प्रियम्बदा, हिन्दी कविता के क्षेत्र में डा० सुषमा वेदी, रेणू गुप्ता, उषा ठाकुर आदि प्रमुख हैं। इग्लैण्ड में प्रवासी महिलाओं में उषाराजे सक्सेना, उषा वर्मा, जय वर्मा, जय ठाकुर आदि ने भी हिन्दी साहित्य में अपनी रचनायें लिखकर विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया। हिन्दी भाषा की प्रमुख लेखिकाओं में कृष्णा सोबती, चित्रा मुदगल, पदमा सचदेव, शशीप्रभा शास्त्री आदि लेखिकाओं ने हिन्दी को समृद्ध करके और उसके विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी के विकास और प्रचार-प्रसार में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है और महिलाओं का यह योगदान आगे भी रहेगा। धन्यवाद

मच्छरीवादी मच्छर

डॉ० केके अस्थाना
मुख्य चीफ असीसटेन्ट (सेवानिवृत)
उ.प्र.राजकीय निर्माण निगम लि०

पता नहीं आदमी की संगत का असर है या मच्छरों का अपना नैसर्गिक स्वभाव! पर बताते हैं जो मच्छर काटते हैं, वह मच्छर नहीं मिसेज मच्छर होते हैं, नर मच्छर कभी नहीं काटते.भगवान् जाने सच्चाई क्या है! पर वैज्ञानिक खोज है तो इसे सही मानना ही पड़ेगा जब तक इससे अलग अगली वैज्ञानिक खोज न आ जाए, वैज्ञानिक खोज के साथ यही तो है, इसे अगली वैज्ञानिक खोज ही गलत साबित कर सकती है, हम साधारण मनुष्य नहीं, इस खोज के साथ मच्छर समाज दो भागों में बंट गया है, नारीवादी, नहीं मच्छरीवादी मच्छरों का मानना है कि नर मच्छर नहीं काटते इसके पीछे कोई बहुत बड़ा कारण थोड़े ही होता है, नहीं काटते तो बस नहीं काटते, अपने मच्छर होने की शान में अकड़े बैठे रहते हैं मच्छरी बेचारी बच्चों के खाने पीने का इंतजाम करने से लेकर आदमी को काटने तक के सारे काम करती है, अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, ”और क्या! ये नर मच्छर मक्कारी में बैठा रहता है“ एक नारीवादी मच्छरी ने उलाहना दिया ”बीबी या गर्ल फ्रेंड से कहता होगा कि जाओ तुम काट लो “दूसरी मच्छरी ने हाँ में हाँ मिलाई! बीबी से रौब जमाता होगा, ”बैठी बैठी पंख फडफडा रही है, वो आदमी इतनी देर से बैठा है, इतना नहीं होता कि जाकर ज़रा एक डंक मार आये !“ एक और मच्छरी के दिल का दर्द सामने आ गया गर्ल फ्रेंड के केस में प्रेम से कहता होगा,“ क्या उस आदमी को डंक मार आओगी प्लीज़“ और गर्ल फ्रेंड इठलाती हुई जाती होगी और बिना बात के उस आदमी के डंक मार कर बलखाती हुई लौट आती होगी. आदमी की संगत का असर इस पर भी कोई कम थोड़े ही है, जो चपला, गर्ल फ्रेंड टाइप की मच्छरी होती हैं, वह तो काट कर तेजी से भाग लेती हैं, पकड़ी नहीं जाती. जैसे मॉल से बॉय फ्रेंड के साथ निकली मच्छरी गर्मी से बचने का बहाना बना कर मुंह ढक कर फुर्र हो जाती है. पकड़ी नहीं जाती. वैसे ही यह मच्छरी होती है, जो बेचारी पत्नी टाइप होती हैं, बच्चों की देखभाल से थकी मांदी, वह काम को बोझ समझ कर काटने जाती हैं,काट कर जल्दी भाग नहीं पाती है, मसल दी जाती है. यह मच्छरों का ऑक्यूपेशनल हैजर्ड है, इस खतरनाक काम में मच्छर खुद नहीं लगता, अपनी अर्धांगिनी को इस कठिन मुहिम पर भेजता है, नारी वादियों को इस पर आपत्ति है।

वैसे इसमें अभी यह भी समझना बाकी है कि मच्छर या मच्छरी जो भी काटते हैं, वह काटते क्यों हैं? ज़िंदा रहने के लिए या आदमी की तरह मनोरंजन के लिए यदि मच्छरी ज़िंदा रहने के लिए काटती है तो बिना काटे नर मच्छर कैसे जिन्दा रहता है? मच्छरी के बच्चे क्या खाते हैं? मच्छरी जब आदमी का खून पी कर जाती है तो अपने बच्चों को वह खून कैसे पिलाती हैं? बड़े अहम् सवाल हैं जिनका उत्तर पाए बिना नर मच्छर के बारे में राय बनाना या उस पर निठल्लेपन का दोष मढना जल्दबाजी होगी, हो सकता है कि मच्छर या मच्छरी विशुद्ध चुहलबाजी के लिए आदमी के कान पर भुनभुनाते हों, और मौका लगते ही काट भी लेतेहों. ऐसी हालत में तो निठल्ला कहा जाने वाला नर मच्छर संत की श्रेणी में आ जायेगा, और काम के बोझ से दबी मच्छरी आतंकवादी कि श्रेणी में, जो बिना बात आदमी को परेशान करती रहती है. आदमियों का कहना है कि तब तो इस पर शोध की और भी ज्यादा आवश्यकता है।

हो सकता है कि ऊपरी दिखावे के अन्दर दोनों की मिली भगत हो. नर मच्छर कान के पास फुसफुसा कर आदमी का ध्यान बटाता हो और इस बीच नारी मच्छरी पैर के पास काट कर भाग आती हो, हो सकता है कि नर मच्छर ने यह काम खुद चुना हो, संभावना इस बात की भी है कि मच्छरी ही उसे इस कठिन मुहिम पर भेजती हो. और नर मच्छर

प्रकृति के बाकी नरों की तरह जान पर खेल कर उसे खुश करने चल देता हो. इस पर भी थोड़ी रिसर्च की जरुरत है। ध्यान देने की बात तो यह भी है कि घने जंगलों में, ऐसी जगह रहने वाले मच्छर, जहां उनकी सात पीढ़ियों ने भी आदमी की सूरत न देखी हो, वह भी आदमी की भनक पाते ही उसे झुण्ड बना बना कर काटने दौड़ पड़ते हैं. उन्हें कैसे पता चलता है कि इस आदमी के अन्दर कोई द्रव भरा है, जिसे खून कहते हैं और दुनिया के दूसरे कोनों में रहने वाले अपने भाई बन्धु मच्छर इस खून को बड़े प्रेम से पीते हैं।

लगता है कि इस पृथ्वी पर आदमी की लाखों साल की संगत का मच्छरों पर बड़ा असर पडा है और उसने बिना बात दूसरे जीवधारियों को सताना सीख लिया है. यह असर एकतरफ़ा नहीं है. आदमी ने भी बदले में मच्छर से बिना बात के भुनभुनाना और मौका लगते ही डंक मारना सीखा है. पर एक बात समझ के अभी भी बाहर है कि मच्छरों में डंक मारने जैसा कठिन काम मिसेज मच्छरों को क्यों मिला है। यह पुरुषवादी मच्छरों की चाल है या नारीवादी, मतलब मच्छरीवादी मच्छारानियों की पहल है।

देहदान चिकित्सा जगत के लिए महादान

संजय भार्गव
क्षेत्रीय प्रमुख –हडको

आज के युग में देहदान को सबसे बड़ा दान माना जाता है। जीवित रहकर हर कोई तरह-तरह के दान करता है, लेकिन जो व्यक्ति अंगदान या देहदान करके जाता है वह मृत्यु के बाद भी कई लोगों को नवजीवन देकर जाता है। इसलिए देहदान या अंगदान को सबसे महान दान माना गया है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि देहदान और अंगदान में अंतर है। जी हां, दोनों सुनने में एक ही जैसे लगते हैं, लेकिन दोनों में काफी ज्यादा अंतर है। किसी भी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसका देह यानि शरीर दान किया जाता है। मेडिकल रिसर्च व एजुकेशन के लिए मृत व्यक्ति का शरीर दान किया जाता है। यह शरीर वहां के छात्रों के रिसर्च के काम आता है। रिसर्च में शोधकर्ता मानव शरीर को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। कुछ व्यक्ति मृत्यु से पहले अपना शरीर दान करके जाते हैं। वहीं, कुछ व्यक्तियों के परिवारजन उनका शरीर मृत्यु के पश्चात दान कर देते हैं ।

देहदान करने का निर्णय सामाजिक, धार्मिक व वैचारिक दृष्टि से बहुत ज्यादा कठिन और कष्टकारी होता है। खासतौर पर मृत्यु के बाद व्यक्तियों के परिवारजनों के लिए यह निर्णय लेना काफी ज्यादा कठिन है। हमारे देश में कई लोगों ने देहदान का निर्णय मृत्यु से पहले लिया है। वहीं, कुछ लोगों के परिजनों ने मृत्यु के बाद उनका शरीरदान किया

है। चिकित्सा जगत के लिए मृत देह अमूल्य है। सिर्फ चिकित्सा शिक्षा ही नहीं, नवीन शोध और जटिल अहपरेशन में वरिष्ठ सर्जस के लिए भी यह देह एक दिव्य प्रकाश का काम कर कई जीवन बचाती है और शल्य चिकित्सकों के लिए सम्पूर्ण ज्ञान व प्रयोगशाला का कार्य करती है।

देहदान ही बनाता है बेहतर डॉक्टर– मेडिकल कॉलेजों में डॉक्टर बनने वाला प्रत्येक छात्र मानव शरीर की रचना और संरचना को देखकर ही प्रैक्टिकल सीखते हैं। मेडिकल कॉलेज में प्रैक्टिकल करने के लिए भी कई सीनियर सर्जन्स आते हैं। ऑपरेशन में जब भी कोई नई तकनीक आती है, तो उसे सीखने और प्रैक्टिकल कर देखने के लिए कडैवेरिक वर्कशॉप (मानव शरीर पर प्रयोग) के लिए भी मानव देह का उपयोग किया जाता है। एंडोस्कोपी, लैप्रोस्कोपी व नवीन सर्जिकल तकनीक को करने से पहले सर्जन सर्जरी के लिए भी अक्सर शरीर रचना विभाग या एनाटोमी में मृत देह पर शोध-प्रयोग करने आते हैं।

अभी भारत में लगभग 640 मेडिकल कॉलेज हो गए हैं और शोध व चिकित्सा शिक्षा के लिए प्रत्येक 10 मेडिकल छात्रों के लिए एक मानव शरीर के अनुपात से मानव देह की बड़ी आवश्यकता है। हमारे देश में एनाटोमी एक्ट के अनुसार देहदान के द्वारा मानव देह को शरीर रचना विभाग में दान के रूप में स्वीकार किया जाता है। मानव देह केवल देहदान से प्राप्त होती है और देहदान श्रेष्ठ चिकित्सक बनाने में अति आवश्यक है। इसलिए हम सबका दायित्व है कि हम देहदान को प्रोत्साहित करें और अपना सहयोग करें।

ब्रेन डेड होने पर शरीर के सभी अंगों को दान में दिया जा सकता है। मृत शरीर के 6 घंटे तक आंखों की कॉर्निया जीवित रहती है, जिसे मृत व्यक्ति मृत्यु से पहले या उसका परिजन दान कर सकता है। हमारे देश में किडनी, लिवर और कॉर्निया की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। इन अंगों को मृत व्यक्ति के शरीर से निकालकर प्रत्यारोपित किया जा सकता है। शरीर के इन अंगों को निकाल कर दान के पश्चात मृत व्यक्ति के शरीर को मेडिकल छात्रों को दान भी किया जा सकता है। पूरे शरीर के दान को देहदान कहते हैं। क्यों देहदान है जरूरी – मेडिकल छात्रों को एनेटोमी पढ़ाने के लिए देह यानि शरीर का इस्तेमाल किया जाता है। इससे छात्र शरीर के स्ट्रक्चर और वह किस तरह से काम करता है, इसके बारे में पढ़ते हैं। सर्जन्स, डेंटिस्ट्स, फिजिशियंश और अन्य हेल्थ केयर प्रोफेशनल्स के कोर्स में यह सबसे अहम हिस्सा माना जाता है। मेडिकल कहलेज को स्वैच्छिक बॉडी डोनेशंस से मृत व्यक्ति का शरीर देहदान के रूप में मिलता है। इसके अलावा पुलिस को मिले अज्ञात शव, जिसे कोई नहीं लेता है, उन शवों को मेडिकल इंस्टीट्यूट में भेजा जाता है।

"जीते जी रक्तदान, मृत्यु के पश्चात नेत्रदान, अंगदान,
देहदान है मानवता को वरदान"

श्रद्धा के बिना भगवान का दर्शन नहीं होता...
वो सिर्फ माँ ही होती है।

कृतिका बंसल,
प्रक्षिशु प्रबंधन (वित्त)

चन्द्रयान–3 महिला शक्ति का अनूठा गठजोड़

रविद्र कुमार
ए.एफ.(एस.जी.)

भारत ने 23 अगस्त 2023 सायं 6:04 मिनट पर चाँद के दक्षिण ध्रुव पर पहली बार सफलतापूर्वक लैंडिग का इतिहास रचा। 14 जलाई 2023 दोपहर 2:35 बजे श्री हरिकोटा से चन्द्रयान-3 ने अपनी उड़ान भरी तथा 40 दिन की लम्बी यात्रा कर अपना सफर 23 अगस्त 2023 को पूरा किया। इसरो के लिए यह अनूठा कीर्तिमान कई भारतीय महिला वैज्ञानिकों, तकनीशन द्वारा अपने योगदान से मिशन की कामयाबी के लिए अपना लोहा मनवाया। आज महिलाएं अपनी मेहनत एवं लगन से नितूनये शिखर छू रही है। जिसमें विज्ञान का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। वहीं आज विश्व चन्द्रयान-3 की सफलता के बाद उनकी सूझबूझ और सकारात्मक कदमों का लोहा मान रहा है।

मिशन में महिला शक्ति–

चन्द्रणान-3 की सफलता में महिला शक्ति का अहम योगदान माना जा रहा है। इस सफलता की बात तो कर रहे हैं। किन्तु उन महिलाओं के बारे में बहुत कम लोग ही जानते हैं इसमें लगभग 54 महिला इंजीनियर / वैज्ञानिक हैं। जो सीधे तौर पर चंद्रयान-3 मिशन के काम पर जुटी है। वे विभिन्न फेंद्रो पर काम करने वाली प्रणालियों की सहयोगी और कुछ परियोजना निदेशक और परियोजना प्रबन्धक हैं, जो पर्दे के पीछे रहकर मिशन की कामयाबी में अहम भूमिका निभाई।

इनमें प्रमुख है–

नंदिनी हरि नाथ - नंदिनी जी 20 वर्षों से इसरो में कार्यरत हैं और 14 मिशन में अपना योगदान दे चुकी हैं वर्तमान में प्रोजेक्ट मेनेजर और मिशन डिजाइनर के रूप में अपनी जिम्मेदारीयों का निर्वहन कर रही है। वे विभिन्न केन्द्रों पर काम करने वाली विभिन्न प्रणालियों की सहयोगी और परियोजना निदेशक और परियोजना प्रबंधक है। उन्होंने मंगल मिशन में डिप्टी ऑपरेशन डायरेक्टर की भूमिका निभाई थी।

डॉ रितु कारी धार श्रीवास्तव - डॉ. रितू कारी धार श्रीवास्तव इसरो में एक वैज्ञानिक और एयरो स्पेस इंजीनियर के पद पर काम करती है। उन्होंने भी मंगलयान मिशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इस मिशन के दौरान उन्होंने भारत के मार्श ऑर्बिट मिशन के लिए डिप्टी ओपरेशन डायरेक्टर की भूमिका निभाई थी इसके साथ ही वह चंद्रयान-3 मिशन में भी सम्मिलित थीं। इनको इसरो यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड मिल चूका हैं ।

मिनल रोहित- मंगलयान मिशन में अहम रोल निर्वहन करने वाली मिनल रोहित प्रमुख महिला वैज्ञानिकों में से एक हैं। मार्श ऑर्बिटर मिशन के लॉन्च के दौरान उन्होंने सिस्टम इंटीग्रेशन इंजीनियर के रूप में काम किया था। इसके अतिरिक्त वह हेड़ इंजीनियर और प्रोजेक्ट मेनेजर के रूप में भी काम कर चुकी है। उन्होंने चन्द्रयान-२ मिशन के दौरान भी अपनी भूमिका निभाई थी इस समय इसरो में डिप्टी प्रोजेक्ट डायरेक्टर है।

अनुराधा टी. के.- अनुराधा टी. के. इसरों की रिटायर प्रोजेक्टर मेंनेजर है। उन्होंने GSAT-10 और GSAT-12 जैसे उपग्रहों के लाँच में अहम भूमिका निभाई थी। कहा जाता है कि यह इसरो की सैटलाइट प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में काम करने वाली पहली महिला वैज्ञानिक है।

मोमिता दत्ता- मोमिता दत्ता एक भारतीय भैतिक शास्त्री हैं। जो इसरो में एक वैज्ञानिक और इंजीनियर के रूप में काम कर रही हैं। इसके अतिरिक्त वह ओप्टिकल उपकरणों के स्वदेशी विकास में लगी एक समर्पित टीम का नेतृत्व भी करती है।

बी. आर ललिताम्बिका - वी. आर ललिताम्बिका इसरो में एक वैज्ञानिक और इंजीनियर हैं। इसरो पूर्व वह विरुवनन्तपुरम में स्थित सारा भाई अन्तरिक्ष केन्द्र (बी.एस.एस.सी.) के उपनिदेशक (कंट्रोल गाइडेंस एवम् सिमुलीशन) के पद पर कार्यकत थी।

टेसी. थॉमस- टेसी थॉमस इसरों में डायरेक्टर जनरल अहृफ एयरोनॉटिक्स सिस्टम के पद पर कार्यरत हैं। वह डी. आर. डी-ओं में अग्नि -४ के लिए प्रोजेक्टर मैनेजर के रूप में काम कर चुकी हैं। सन 2022 में उन्हें लोक मान्य तिलक अवॉर्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है।

मुथैया वनिता- मुथैया वनिता चंद्रयान -2 मिशन में प्रोजेक्ट डायरेक्टर थी। इन्होने लगभग 30 वर्षो के कैरियर में इसरों के कई ऑपरेशन में कामयावी दिला चुकी हैं। अतः भारत की महिलायें आज विश्व भर में अपना डंका बजा चुकी है, वे किसी भी क्षेत्र में आज पुरुषों से पीछे नहीं है। जिसपर राष्ट्र को तथा प्रत्येक प्रतेक भारत्य को गर्व करना चाहिए।

गढ़वाल का इतिहास

कु० मीरा,
कंप्यूटर संचालक

परंपरागत रूप से उत्तराखंड का केदारखंड के रूप में विभिन्न हिंदू ग्रंथों में उल्लेख मिलता है। गढ़वाल राज्य में क्षत्रियों का राज था। दूसरी शताब्दी ई.पू. के आसपास कुनिंदा राज्य भी विकसित हुआ। बाद में यह क्षेत्र कत्युरी राजाओं के अधीन रहा, जिन्होंने कत्युर घाटी, बैजनाथ, उत्तराखंड से कुमाऊं और गढ़वाल क्षेत्र में 6वीं शताब्दी ई. से 11वीं शताब्दी ई. तक राज किया, बाद में चंद राजाओं ने कुमाऊं में राज करना शुरू किया, उसी दौरान गढ़वाल कई छोटी रियासतों में बाँट गया, ह्वेनसांग, नामक चीनी यात्री, जिसने 629 ई. के आसपास क्षेत्र का दौरा किया था, ने इस क्षेत्र में ब्रह्मपुर नामक राज्य का उल्लेख किया है।

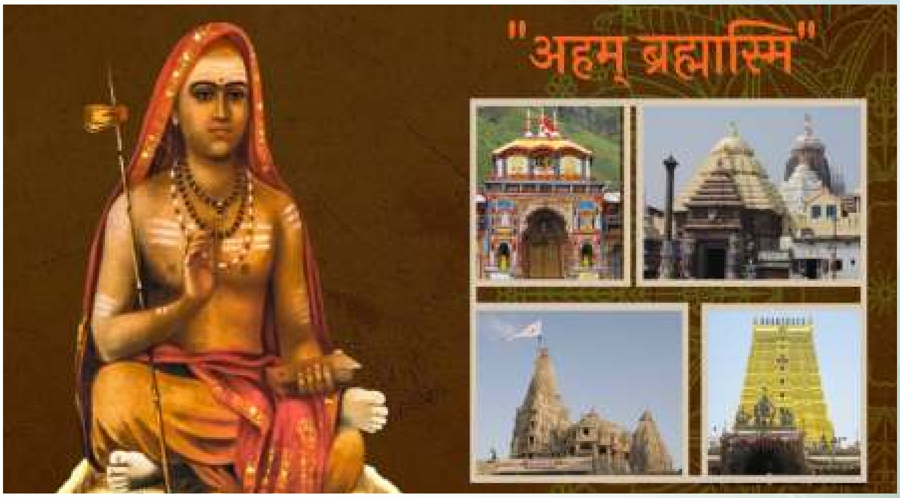

इसी बीच 8वीं शताब्दी ई. में सनातन धर्म का पुनरुद्धार करने आदि शंकराचार्य जब उत्तराखंड आये थे तो उन्होंने एक शहतूत पेड़ के नीचे जोशीमठ में पूजा की थी। यहाँ उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। आदि शंकराचार्य ने भारत के चारो दिशाओं में धर्म कि राजधानियों कि स्थापना करी थी तथा चार मठो कि स्थापना भी कि थी। सम्पुण भारत वर्ष एवं चार धाम कि यात्रा करने के बाद अपने अंतिम समय में आदि शंकराचार्य केदारनाथ धाम आये और वह उन्होंने केदारनाथ मंदिर का पुनरू निर्माण कराया था और मंदिर के ठीक पीछे 32 वर्ष कि आयु में 820 ई में समाधि ले ली इसके बाद उनके भगतो के द्वारा उस स्थान पर आदि शंकराचार्य को समर्पित समाधि स्थल का निर्माण कराया गया था।

888 ई से पहले पूरा गढ़वाल क्षेत्र अलग अलग स्वतंत्र राजाओं द्वारा शासित छोटे छोटे गढ़ों में विभाजित था। जिनके शासकों को राणा, राय और ठाकुर कहा जाता था। ऐसा कहा जाता है कि 823 ई. में जब मालवा के राजकुमार कनकपाल श्री बदरीनाथ जी के दर्शन को आये। वहां उनकी भेंट तत्कालीन राजा भानुप्रताप से हुई। राजा भानुप्रताप ने राज कुमार कनक पाल से प्रभावित होकर अपनी एक मात्र पुत्री का विवाह उनके साथ तय कर दिया और अपना सारा राज्य उन्हें सौंप दिया। धीरे धीरे कनक पाल एवं उनके वंशजों ने सरे गढ़ों पर विजय प्राप्त कर साम्राज्य का विस्तार किया। इस प्रकार 1803 तक अर्थात 915 वर्षों तक समस्त गढ़वाल क्षेत्र इनके आधीन रहा।

1794-95 के दौरान गढ़वाल क्षेत्र गंभीर अकाल से ग्रस्त रहा तथा पुनः 1883 में यह क्षेत्र भयानक भूकंप से त्रस्त रहा। तब तक गोरखाओं ने इस क्षेत्र पर आक्रमण करना शुरू कर दिया था और इस क्षेत्र पर उनके प्रभाव की शुरुवात हुयी। सन 1803 में उन्होंने पुनः गढ़वाल क्षेत्र पर महाराजा प्रद्युम्न शाह के शासन काल में आक्रमण किया। महाराजा प्रद्युम्न शाह देहरादून में गौरखाओं से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए परन्तु उनके एक मात्र नाबालिग पुत्र सुदर्शन शाह को उनके विश्वासपात्र राजदरबारियों ने चालाकी से बचा लिया। इस लड़ाई के पश्चात गोरखाओं की

विजय के साथ ही उनका अधिराज्य गढ़वाल क्षेत्र में स्थापित हुआ। इसके पश्चात उनका राज्य कांगड़ा तक फैला और उन्होंने यहाँ 12 वर्षों तक राज्य किया जब तक कि उन्हें महाराजा रणजीत सिंह के द्वारा कांगड़ा से बाहर नहीं निकाल दिया गया। वही दूसरी ओर सुदर्शन शाह ईस्ट इंडिया कम्पनी से मदद का प्रबंध करने लगे ताकि गोरखाओं से अपने राज्य को मुक्त करा सकें। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने कुमाउं, देहरादून एवं पूर्वी गढ़वाल का एक साथ ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर दिया तथा पश्चिमी गढ़वाल को राजा सुदर्शन शाह को सौंप दिया जो टिहरी रियासत के नाम से जाना गया महाराजा सुदर्शन शाह ने अपनी राजधानी टिहरी नगर में स्थापित की तथा इसके पश्चात उनके उत्तराधिकारियों प्रताप शाह, कीर्ति शाह तथा नरेन्द्र शाह ने अपनी राजधानी क्रमशः प्रताप नगर, कीर्ति नगर एवं नरेंद नगर में स्थापित की । इनके वंशजों ने इस क्षेत्र में 1815 से 1949 तक शासन किया। भारत छोड़ो आन्दोलन के समय इस क्षेत्र के लोगों ने सक्रिय रूप से भारत की आजादी के लिए बढ़ चढ़ कर भाग लिया और अन्त में जब देश को 1947 में आजादी मिली टिहरी रियासत के निवासियों ने स्वतंत्र भारत में विलय के लिए आन्दोलन किया। इस आन्दोलन के कारण परिस्थियाँ महाराजा के वश में नहीं रहीं और उनके लिए शासन करना कठिन हो गया जिसके फलस्वरूप पंवार वंश के शासक महाराजा मानवेन्द्र शाह ने भारत सरकार की सम्प्रभुता स्वीकार कर ली। अन्ततः सन 1949 में टिहरी रियासत का भारत में विलय हो गया। इसके पश्चात टिहरी को उत्तर प्रदेश के एक नए जनपद का दर्जा दिया गया।

उत्तराखंड को 5-6 मई 1938 ई० को श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखंड में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में इस क्षेत्र को पृथक राज्य बनाने के सम्बंधित मांग उठाई गयी थी।
इस अधिवेशन की अध्यक्षता जवाहर लाल नेहरू कर रहे थे। 1938 इ० में श्री देव सुमन ने पृथक राज्य की मांग हेतु दिल्ली में गढ़देश सेवा संघ की स्थापना की बाद में इस संगठन का नाम हिमालय सेवा संगठन हो गया था।
1946 में हल्द्वानी में कांग्रेस सम्मेलन हुआ जिसमें अनुसूया प्रसाद बहुगुणा ने गढ़वाल व कुमाऊँ को अलग क्षेत्रीय भाग बनाने की मांग उठाई गयी व बद्रीदत्त पांडे द्वारा उत्तरांचल के पर्वतीय भूभाग को विशेष वर्ग में रखने की मांग उठाई गयी।

- ❖ वर्ष 1950 ई० में उत्तराखंड एवं हिमाचल को एक पृथक हिमालयी राज्य बनाने के लिये पर्वतीय विकास जन समिति नामक संगठन बनाया गया।
- ❖ 1955 में फजल अली आयोग ने उत्तर प्रदेश के पुनर्गठन हेतु पृथक क्षेत्र बनाने की मांग की। 1957 ई० में टिहरी नरेश मानवेन्द्र शाह भी उत्तराखंड पृथक क्षेत्र बनाने की मांग की।
- ❖ 1994 में मुलायम सिंह यादव ने उत्तराखंड पृथक राज्य हेतु दो समितियों का गठन किया – कौशिक समिति व बड़थ्वाल राज्य आंदोलन में जुड़ गये व अपने स्तर से शुरू किया।
  मई 1994 में कौशिक समिति ने उत्तराखंड पृथक राज्य पर अपनी राय प्रस्तुत की व उत्तराखण्ड राज्य में 8 जनपदों व 3 मंडलो की स्थापना की सिफारिश की थी।
- ❖ 21 जून 1994 ई० में मुलायम यादव सरकार ने कौशिक समिति की सिफारिश स्वीकार की।
- ❖ 25 जनवरी 1995 उत्तरांचल आन्दोलन संचालन समिति ने संविधान बचाओ यात्रा निकाली।
- ❖ 15 अगस्त 1996 को तत्कालीन प्रधानमंत्री हरदनहल्ली डोडेगौडा देवगौडा (H. D. Deve Gowda) ने लालकिले से उत्तराखंड राज्य की घोषणा की।

- 27 जुलाई 2000 को उत्तर प्रदेश पुनर्गठन विधेयक लोकसभा में प्रस्तुत किया गया।
- 01 अगस्त 2000 को यह विधेयक लोकसभा में पास हो गया।
- 10 अगस्त 2000 को यह विधेयक राज्य सभा में भी पारित हो गया।
- 28 अगस्त 2000 को राष्ट्रपति रासीपुरम कृष्णस्वामी अय्यर नारायणस्वामी (आर. के. नारायण) द्वारा इस विधेयक पर हस्ताक्षर किए गए।
- 09 नवम्बर 2000 को भारत को 27 वें राज्य के रूप में उत्तरांचल राज्य का गठन हुआ।
- 01 जनवरी 2007 को राज्य का नाम उत्तरांचल से परिवर्तित कर उत्तराखंड किया गया।

मंडला आर्ट

कु० तानिया ठकराल,
प्रक्षिशु प्रबंधन(वित्त)

मंडला आर्ट कला का एक रूप है जहां रचनाकार आमतौर पर एक गोलाकार रूप में जटिल डिजाइन तैयार करता है, मंडला आर्ट में एक केंद्र बिंदु होता है, जिसमें से प्रतीकों, आकृतियों और रूपों की एक सरणी निकलती है, इस डिजाइन में आमतौर पर कई परतें होती हैं, मंडला आर्ट आकार और प्रकृति के संदर्भ में विकसित हुए है, मंडला आर्ट बनाते समय बारीक पैटर्न को समरूपता में बनाया जाता है, मंडला आर्ट में सबसे महत्वपूर्ण है कि हर पैटर्न अंत में एक विशाल चक्र या किसी दुसरे आकर का हिस्सा बनता है। बौद्ध भिक्षु और मंडला आर्ट का संबंध पुराने समय में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा धार्मिक उद्देश्यों के लिए मंडल बनाए जाते थे, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, बहुत से लोगों ने विभिन्न प्रकार के मंडला बनाना शुरू कर दिए, संस्कृत में शाब्दिक अर्थ 'सर्कल' या 'केंद्र', मंडला को एक ज्यामितीय विन्यास द्वारा परिभाषित किया जाता है जो आमतौर पर किसी न किसी रूप में गोलाकार आकार को शामिल करता है, जबकि इसे एक वर्ग के आकार में भी बनाया जा सकता है, मंडल पैटर्न अनिवार्य रूप से परस्पर जुड़ा हुआ है, माना जाता है कि यह बौद्ध धर्म में निहित है, जो भारत में पहली शताब्दी ईसा पूर्व में प्रकट हुआ था, अगली दो शताब्दियों में, सिल्क रोड के साथ यात्रा करने वाले बौद्ध मिशनरी इसे अन्य क्षेत्रों में ले गए, छठी शताब्दी तक, चीन, कोरिया, जापान, इंडोनेशिया और तिब्बत में मंडल दर्ज किए गए हैं, हिंदू धर्म में, मंडल इमेजरी पहली बार ऋग्वेद (1500-500 ईसा पूर्व) में दिखाई दी।

मंडला आर्ट का मूलभाव

ऐसा माना जाता है कि मंडल में प्रवेश करके और उसके केंद्र की ओर बढ़ते हुए, ब्रह्मांड को एक दुख से आनंद में बदलने की ब्रह्मांडीय प्रक्रिया के माध्यम से निर्देशित किया जाता है, एक पारंपरिक बौद्ध मंडल, रंगीन रेत से खींची गई एक गोलाकार पेंटिंग, ध्यान में सहायता करती है, जिसका मुख्य उद्देश्य इसके निर्माता को उनके वास्तविक स्व की खोज में सहायता करना है, हिंदू धर्म में, एक मंडल या यंत्र एक वर्ग के आकार में होता है जिसके केंद्र में एक चक्र होता है, तनाव और एंग्जायटी आज के जीवन का हिस्सा बन चुके हैं, इसे दूर करने के लिए दुनियाभर में लोग तरह-तरह के उपाय कर रहे हैं, इन्हीं तरीकों में से एक है मंडला आर्ट थेरेपी, जी हां, कला की मदद से आप अपनी मानसिक सेहत को तो अच्छा कर ही सकते हैं, साथ ही खुद को अधिक समय तक शांत भी रख सकते हैं, मंडला थेरेपी एक सिंपल आर्ट है जिसे कोई भी ट्राई कर सकता है और इसके लिए आपको कलाकार होने की भी जरूरत नहीं है, आप कुछ बेसिक बातों को सीखकर इस आर्ट की मदद से अपने मन को शांत कर सकते हैं, जब आप मंडला आर्ट बना रहे होते हैं तो उसकी बारीकियों के कारण पूरा ध्यान आर्ट पर रहता है और इससे कर्टिसोल हर्मोन का स्तर कम होता जाता है जिससे तनाव दूर होने लगता है ।

वो सिर्फ माँ ही होती

कृतिका बंसल
प्रक्षिशु प्रबंधन (वित्त)

मातृत्व के एहसास से, जो फूले ना समाती है।
नौ माह तक गर्भ मे, बच्चे को रक्तपान कराती है।
पेट में बच्चे की पहली आहट, खुशी से सह लेती है।
स्वयं से ही दर्द और खुशी, सब कुछ कह लेती हैं।।
मातृत्व के आनंद के साथ, रिश्तों का आभास है वो।
खुद दर्द सह के भी, परिवार का प्रकाश है वो।।
शिशु के प्रथम क्रंदन पर, जो फूले ना समाती है।
बिना संगीत सीखे ही, वो पंचम सुर मे गाती है।।
बच्चों के रोने पर जो, एक पल भी ना सोती हैं।
दोस्तों इस जहां मे वो, सिर्फ माँ ही होती है ।
खुद प्रसव पीड़ा सह कर, पिता का नाम देती है।
प्रेम की प्रतिभूति होती है, त्याग का पैगाम देती है।।
पहली बार चलना, पहली बार खाना ।
चलते हुए गिरने पर, माँ का वो घबराना।।
तोता मैना कहते कहते, प्यार से खाना खिलाना ।
शाम होते ही नभ में, चंदा मामा से मिलाना।।
आदि गुरु हैं, जननि है, सभ्यता और संस्कार की।
माँ बसती है मानव में, रचयिता हैं पूरे संसार की।।
हर दर्द सहती है पर जो, एक पल भी ना रोती है।
दोस्तो इस जहां मे वो, सिर्फ माँ ही होती है।
पहली बार जब घर को छोड़ा, माँ तुम कितना रोई थी।
हर पल मुझसे बात ही करती, एक पल भी ना सोई थी।
मैं भी रो के रात गुजारी, याद तुम्हारी आती थी।
छोड़ तुम्हारे हाथ की रोटी, मुझको कुछ ना भाती थी।
कोई पुछा काम को मेरे, कोई पुछें क्या है कमाया ?
केवल माँ ने पूछा मुझसे, बेटा तुमने खाना खाया?
पहली साड़ी लेकर माँ, तुम कितनी मुस्काई थी।
तुमको हंसता देख के मैया, आंखे मेरी भर आयी थी ।
ना करोड़ों की ख्वाहिश जिसे, सिर्फ प्यार की भूख होती है।
दोस्तो इस जहां में तो, सिर्फ माँ हो होती है।

माँ के आंसू जिसे घर में निकले, वह घर उठ नहीं सकता है।
माँ के चरण रहे जिस घर मे, वह घर टुट नही सकता हैं।।
शीश महल से इस घर में, माँ का भी एक स्थान रहे।
नव पीढी की चकाचौध मे, वह पीछे रह जाती है।
कोई उसको कुछ भी कह दें, चुपके से सह जाती है।
तुमसे वो कुछ कह ना पाती, आंसू पीकर रहती है।
कल तक घर की मुखिया थी, अब जख्मे सीकार रहती है।।
कैसी हो माँ कहते ही, झट से जो खुश होती है।
दोस्तो इस जहां में वो, सिर्फ माँ ही होती है।।

पापा

श्री शंकर चौधरी
प्रबंधक (विधि)

चाहे कह लो बापू, पिता या बाबा,
या फिर अब्बू, डैडी या पापा।
यह तो बस पुकारने के हैं साधारण नाम,
पर ध्यान रहे यह व्यक्ति नहीं है आम।
यह है हमारे जन्म दाता,
इनका ऋण कोई नहीं चुका सकता।
प्रेम और सख्ती के दोनो स्वरूप,
न्योछावर होते हम पर समय के अनुरूप।
माँ के प्यार के चर्चे तो हैं विख्यात,
पर पिता का हृदय भी होता है विराट।
माँ अगर है ममता की मूरत,
तो यह भी हैं भव्यता की इमारत।
हमारी आन-बान-शान के रखवाले,
हमारे अन्धेरों को भगाने वाले।
जीवन के मूल्यों के शिक्षक,
सही पथ पर चलाने वाले दिग्दर्शक।
भूखा हमें रखा नहीं कभी,
दुखों से हमेशा दूर रखा सभी।
दिन रात खून पसीना बहाया,
हमें सबसे अच्छा सब कुछ दिलाया।
इनकी मेहनत और हैं लगन बेमिसाल,
इनकी बुद्धि और जोश हैं कमाल।
हमारी सारी उपलब्धियाँ हैं इनको श्रेय,
हमारी खुशियाँ थीं सदा इनका ध्येय।
कुछ ऐसे हैं मेरे पापा, मेरे सूपर हीरो,
कृतज्ञता - आभार से इनको शत शत नमन ढेरों
कहते हैं ढूँढने पर मिलते हैं भगवान,
हमें तो आँख खोलते ही मिल गया था यह वरदान

जय उत्तराखड

श्री डी.एन. भट्ट,
ए.एफ. (एस.जी.)

हम उस माटी के बने हैं।
जहाँ देवता रहते हैं।
इस लिये मेरी मातृभूमि को ।
देव भूमि भी कहते हैं।
गंगा यमुना बहती जिसमें ।
ऊँचा जिसका हिमालय हो।
नमन है ऐसी मातृभूमि को ।
जहाँ केदार सा शिवालय हो ।
जहाँ ढोल दमाऊ और हड़को।
आज भी बजाये जाते हैं।
जहाँ तिलू रौतेली और मालूशाही ।
के गीत आज भी गाये जाते हैं।
जहाँ हर पर्वत की चोटी पर ।
आज भी देवता बिठाये जाते हैं।
जहाँ भट्ट की चुड़काणी ।
दाल गौहत की बड़े चाव से खाते है।
अल्मोड़ा के बाल सभी को ।
आज भी बहुत भाते है।
जहाँ घर घर में तुलसी गाय को ।
आज भी पूजा जाता है ।
यही तो मेरा उत्तराखन्ड है।
जो हर दुनिया को भा जाता है।

नहीं होता

मंजुला चौहान
पत्नी श्री बीएस चौहान

लिख नहीं पाते वाल्मीकि रामायण को..
अगर क्रौंच पक्षी का क्रंदन नहीं होता..
देवताओं के पास अमृत आता कहां से..
अगर अथाह समुद्र का मंथन नहीं होता..
सौभाग्य भी लौट जाता है उस जगह से..
जिस घर में भगवान का वंदन नहीं होता..
युद्ध भी जरूरी है धर्म की रक्षा के लिए..
नहीं तो विष्णु के पास सुदर्शन नहीं होता..
यमुना विष और आतंक मुक्त होती नहीं..
अगर नाग कालिया का मर्दन नहीं होता..
महाभारत में विजय धर्म की होती कैसे..
अर्जुन को गर कृष्ण का समर्थन नहीं होता..
नास्तिक को ईश्वर से मिलाना मुमकिन नहीं..
श्रद्धा के बिना भगवान का दर्शन नहीं होता...

–महासू देवता मन्दिर
हनोल, जनपद देहरादून, उत्तराखण्ड

बेटी

प्रताप लाल
ए.एफ.(एस.जी.)

बेटियाँ होती हैं खास,
होती हैं बेटियाँ आस।
जिस घर में बेटी का वास,
उस घर में है दुर्गा निवास ।
बेटियाँ होती घर की शान,
बेटियाँ होती हैं स्वाभिमान ।
हर रिश्तों की तुम पहचान,
तुम हो बुलंदियों की उड़ान ।
क्या-क्या तेरी गाथा गाऊँ
कहाँ से करूं कहानी शुरू ।
कहाँ-कहाँ तेरा नाम नहीं,
सारे जहाँ में तू महान बेटी ।
तू है दुर्गा, तू भवानी,
तू है जननी, तू कल्याणी,
तू ही है सिंहवाहिनी ।
तू है झाँसी की रानी,
बेटी तेरी अमर कहानी।
तू ही है भारत माता,
तू वीटों की जन्मदाता।
तू है गौरव की गाथा,
तू ही है माँ धरती माता।
धरा से लेकर अम्बर तक,
चाँद से लेकर तारों तक।
गाँव से होकर शहर तक,
पहचान तेरी चारों तरफ़ ।
पहचान है तेरी चारों तरफ़ ।।

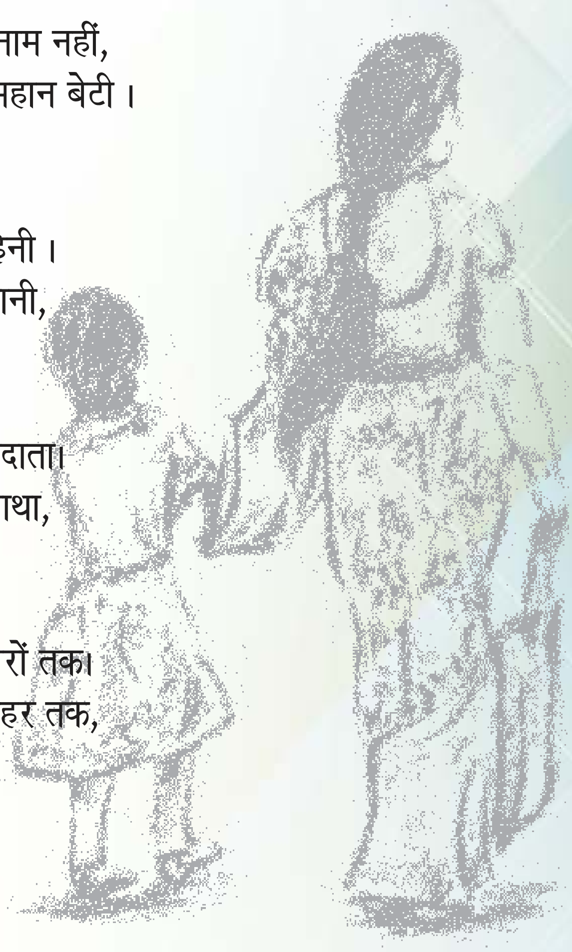

देहरादून, उत्तराखंड के 05 वार्डों में एसडब्ल्यूएम जागरूकता सृजन और घर-घर कचरा संग्रहण के लिए पिक-अप ट्रकों (05 संख्या) की खरीद

इस पहल में ठोस कचरे के संग्रह और उचित कचरा निपटान के महत्व के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित पांच पिकअप ट्रकों का क्रय शामिल था। इन नए अधिग्रहीत पिकअप ट्रकों को नगर निगम देहरादून की मौजूदा संपत्तियों के साथ एकीकृत करके, कचरा संग्रहण की दक्षता में काफी सुधार किया गया है, जिससे देहरादून में व्यापक आबादी तक उनकी पहुंच बढ़ गई है। हडको द्वारा रु.31.07 लाख का अनुदान नगर निगम देहरादून को दिया गया ।

आदर्श ग्राम पंचायत सीम का विकास, ब्लॉक भिकियासैंण, जिला अल्मोडा, उत्तराखंड।

इस परियोजना में कई प्रकार के घटक शामिल हैं, जिसमें विकासात्मक मार्गों का निर्माण, पानी की टंकियों की स्थापना, सौर स्ट्रीट लाइट की स्थापना और एक सामुदायिक हॉल और एक यात्री शेड का निर्माण शामिल है। साथ में, ये पहल उत्तराखंड के अल्मोडा जिले के भिकियासैंण ब्लॉक में स्थित ग्राम पंचायत सीम के दूरदराज के गांवों में निवासियों के जीवन की गुणवत्ता को ऊपर उठाने का प्रयास करती है। व्यापक लक्ष्यों में कनेक्टिविटी में सुधार, पर्याप्त स्ट्रीट लाइटिंग सुनिश्चित करना, पानी की उपलब्धता को सुविधाजनक बनाना और आवश्यक सामुदायिक सुविधाएं प्रदान करना शामिल है। हडको ने रुपये आवंटित किये हैं। इस कार्य हेतु खंड विकास कार्यालय को रु64.47 लाख स्वीकृत किए गए।

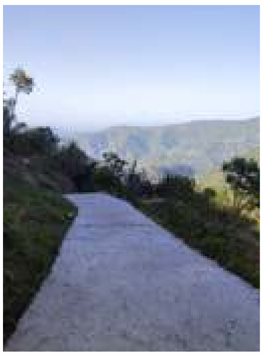

हडको ने उत्तराखंड में सीएसआर योजनाओं को वित्तपोषित किया

विवेक प्रधान
प्रबंधक (परियोजना)

कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व योजना के रूप में, हडको द्वारा उत्तराखंड राज्य में कुल 17 सीएसआर परियोजनाओं को मंजूरी दी है तथा विभिन्न स्थानों पर रु.1662.18 लाख की योजना स्वीकृत की। इन परियोजनाओं में विभिन्न प्रकार की श्रेणियां शामिल हैं, जिनमें ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, सौर स्ट्रीट लाइटिंग, ग्रामीण जल आपूर्ति, रात्रि आश्रय, यातायात सुविधाओं में वृद्धि, सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण, सार्वजनिक अतिथि गृह और स्कूली छात्रों के लिए बैठने के फर्नीचर का प्रावधान इत्यादि शामिल है। पिछले वर्ष हडको सीएसआर के माध्यम से वित्त पोषित कुछ परियोजनाओं में शामिल हैं:–

अल्मोडा में 15 चयनित स्थानों पर नगरपालिका संग्रहण हेतु भूमिगत बिन प्रणाली की आर्पूित एवं स्थापना।

उत्तराखंड के अल्मोडा शहर में, विभिन्न स्थानों पर रणनीतिक रूप से कुल 15 भूमिगत कचरा संग्रहण डिब्बे स्थापित किए गए हैं। इस परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य खुले में गंदगी को खत्म करना, सार्वजनिक स्वास्थ्य मानकों को बढ़ाना और बेहतर स्वच्छता और साफ–सफाई को बढ़ावा देकर शहर की समग्र सौंदर्य अपील को बढ़ाना था। इन डिब्बों का सीलबंद डिज़ाइन कचरे के अतिप्रवाह को रोकने और कचरे के सफल रोकथाम में योगदान करने के दोहरे उद्देश्य को पूरा करता है। इन भूमिगत कूड़ेदानों की स्थापना के बाद से, अल्मोडा शहर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
हडको ने रु.46.90 का योगदान दिया।

सरकारी स्कूलों में छात्रों के लिए फर्नीचर (कुर्सियाँ और मेज/डेस्क और बेंच) उपलब्ध कराना। उत्तराखंड के उधम सिंह नगर जिले के सहायता प्राप्त विद्यालय।

इस परियोजना में संयुक्त डेस्क और बेंच के साथ–साथ कुर्सियों और मेजों के 1029 सेटों का प्रावधान शामिल है, जिससे पहली से 12वीं कक्षा तक के कुल 1431 छात्र लाभान्वित होंगे। ये सामान उत्तराखंड के उधम सिंह नगर जिले के खटीमा ब्लॉक के 21 सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में वितरित किया जाएगा। इस पहल का प्राथमिक लक्ष्य छात्रों के सीखने के अनुभव को बढ़ाना और आरामदायक और अनुकूल बैठने की व्यवस्था प्रदान करके उनकी समग्र शैक्षणिक सफलता में योगदान देना है। हडको ने उदारतापूर्वक रु.26.73 लाख का अनुदान दिया है।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून में दीपावली मनाई गई

कोटीबनाल ग्राम, उत्तरकाशी उत्तराखंड राज्य की ऐतिहासिक धरोहर। कोटिबनाल पत्थर की चिना और देवदार की लकड़ी की अधिरचनाओं की पारंपरिक तकनीकों वाला ऐतिहासिक गांव है। यह संरचना लगभग 500 वर्ष पुरानी और भूकंप प्रतिरोधी निर्मित बता जा रही है, जिसे विरासत के रूप में संरक्षित करने की आवश्यकता है।

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि.
(भारत सरकार)
देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय
74/1, राजपुर रोड, जीएमवीएन बिल्डिंग, द्वितीय तल, देहरादून
दूरभाष : 0135-2748405
ई-मेल : dro@hudco.org

हडको जीवन गुणवत्ता में सुधार के लिए सबके लिए सतत् पर्यावास को बढ़ावा देता है।

सबके लिए आवास | कार्मिक प्रशिक्षण | परामर्श सेवाएं
सी एस आर के लिए प्रतिबद्ध |अर्बन इंफ्रास्ट्रक्चर

वर्ष 1970 से भारत में आवास और शहरी अव–संरचना परियोजनाओं को ऋण उपलब्ध कराते हुए हडको भारत की प्रमुख तकनीकी वित्त पोषक कम्पनी है जो अनवरत विकास के साथ ईडब्लूएस/एलआईजी श्रेणी के आवास जरूरतों पर विशेष जोर देती है।

अनुरोध

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका ''देवालय'' के सफल प्रकाशन के पश्चात चतुर्थ संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है। यद्यपि इस प्रकाशन को बहुत सावधानी पूर्वक तैयार करने का प्रयास किया गया है फिर भी कतिपय त्रुटियों से इन्कार नहीं किया जा सकता। पाठकगणों से अनुरोध है कि वे इंगित त्रुटियों एवं अपने अमूल्य सुझावों से अवगत कराने का कष्ट करें।

सादर!

बलराम सिंह चौहान
प्रबंधक (आई.टी.)/
नोडल सहायक (राजभाषा)